Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ हरतालिका तीज पूजा विधि ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजन की तैयारी और सामग्री ॥

हरतालिका तीज भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया से जुड़ा पर्व है। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन किया जाता है। पूजा का मुहूर्त स्थान और वर्ष के अनुसार बदलता है; अपने शहर का पंचांग और घर की परंपरा देखें।

पूजा स्थल और प्रतिमा

स्वच्छ स्थान पर चौकी रखकर साफ वस्त्र बिछाएँ। शिव-पार्वती की प्रतिमा या चित्र रखें। अनेक परिवार मिट्टी अथवा रेत से शिव-पार्वती का प्रतीक बनाते हैं; गणेशजी का स्मरण या उनकी प्रतिमा भी रखते हैं। प्रतिमा और स्थापना का तरीका अपने घर की रीति से चुनें।

सामान्य पूजन सामग्री

जल का पात्र, अक्षत, फूल, बेलपत्र, धूप, दीपक, बाती, घी या तेल, चंदन, फल, मिठाई और नैवेद्य रखें। घर की परंपरा में गौरी के लिए चुनरी और श्रृंगार-सामग्री रखी जाती हो तो वह भी तैयार करें। केवल उपलब्ध और सुरक्षित सामग्री का प्रयोग करें।

बेलपत्र सामान्यतः शिव को अर्पित किया जाता है। सिंदूर और श्रृंगार माता गौरी को चढ़ाने की पारिवारिक रीति अलग-अलग हो सकती है। सामग्री के अभाव में पूजा छोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकल्प और मुख्य पूजा क्रम ॥

१. स्नान और संकल्प

स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहनें और पूजा-स्थल साफ करें। हाथ जोड़कर शिव-पार्वती का स्मरण करें। अपनी सामर्थ्य तथा स्वास्थ्य के अनुसार व्रत रखने का संकल्प लें। पारिवारिक रीति में सुबह या प्रदोषकाल का जो पूजन-विधान हो, उसके अनुसार समय निर्धारित करें।

२. गणेश स्मरण और स्थापना

पहले गणेशजी का स्मरण करें। फिर शिव-पार्वती की प्रतिमा या चित्र के सामने दीपक जलाएँ। दीपक को सुरक्षित, स्थिर स्थान पर रखें। जल, अक्षत और पुष्प अर्पित कर मन को शांत करें। मिट्टी की प्रतिमा रखी हो तो उसे जल से खराब होने से बचाते हुए प्रतीकात्मक अर्पण करें।

३. शिव-पार्वती का पूजन

शिव को जल और बेलपत्र तथा गौरी को पुष्प, चुनरी या श्रृंगार-सामग्री अपनी रीति के अनुसार अर्पित करें। धूप-दीप दिखाएँ और फल-मिठाई का भोग लगाएँ। 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें और शिव-पार्वती से सद्भाव व मंगल की प्रार्थना करें।

४. कथा और आरती

हरतालिका तीज व्रत कथा पढ़ें या सुनें। परिवार के सदस्य साथ बैठ सकते हैं। कथा के बाद शिव-पार्वती की आरती करें, प्रणाम करें और प्रसाद रखें। जरूरत के अनुसार पूजा-स्थल को व्यवस्थित करें; खुले दीपक को बिना देखरेख के न छोड़ें।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ रात्रि पूजन और पारण ॥

जागरण की परंपरा

कुछ घरों में तीज की रात भजन, नाम-स्मरण और जागरण किया जाता है। अन्य परिवारों में पूजा के समय और जागरण का क्रम अलग होता है। यदि स्वास्थ्य या पारिवारिक परिस्थितियों के कारण पूरी रात जागना संभव न हो, तो अपनी क्षमता के अनुसार श्रद्धा से पूजन करें।

अगली सुबह व्रत खोलना

अनेक परंपराओं में अगले दिन स्नान और प्रातः पूजा के बाद पारण किया जाता है। जल और प्रसाद से व्रत खोलें, फिर उचित भोजन लें। पारण का समय और भोजन की रीति अपने परिवार के बड़ों या स्थानीय पंडित से पूछें; इसे उसी दिन संध्या में खुलने वाले दूसरे व्रतों से न मिलाएँ।

प्रतिमा और सामग्री का सम्मान

मिट्टी या रेत की प्रतिमा का विसर्जन घर की परंपरा तथा स्थानीय पर्यावरण-नियमों के अनुसार करें। प्लास्टिक और सजावटी कचरा जलाशय में न डालें। उपयोगी सामग्री सँभालकर रखें और प्रसाद परिवार में बाँटें।

यह सामान्य घरेलू पूजा क्रम है। विशेष मंत्र, आवाहन और विस्तृत विधान के लिए अपनी परंपरा के जानकार पुरोहित से मार्गदर्शन लें।

॥ शिव-पार्वती सबका मंगल करें ॥